1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा बिभेर्न मरिष्यसि।।
– अथर्व. 5/30/8
हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।
O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 42, अंक 35 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 जुलाई, 2019 से रविवार 28 जुलाई, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य समाज की ओर से नवनिर्वाचित सांसदों का सम्मान समारोह सम्पन्न

आर्य ऑडिटोरियम, ईस्ट ऑफ कैलाश में आर्यजनों की भारी संख्या में उपस्थिति प्रशंसनीय

सभी आर्यजन सेवापथ पर आगे बढ़ें – आशीर्वचन
–पद्मभूषण महाशय धर्मपाल

मेरी प्रेरणा के प्रकाशपुंज हैं – महर्षि दयानंद सरस्वती
– स्वामी सुमेधानंद

मेरा जीवन, पद-प्रतिष्ठा और सम्मान-ऋषि दयानंद को समर्पित
–डॉ सत्यपाल सिंह

धर्म में राजनीति नहीं राजनीति में धर्म अवश्य होना चाहिए
–धर्मपाल आर्य

वैदिक सिद्धान्तों से समझौता नहीं करते-आर्य राजनेता – मा. रामपाल

देश के श्रेष्ठ नेतृत्व को दें सहयोग – योगेश मुंजाल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केंद्रीय सभा के तत्त्वावधान में आर्य ऑडिटोरियम, देशराज कैम्पस, ईस्ट ऑफ कैलाश नई दिल्ली के प्रांगण में 21 जुलाई 2019 को नव निर्वाचित आर्य सासंदों का भावपूर्ण अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्यों की उपस्थिति के साथ-साथ दिल्ली के सभी वेदप्रचार मण्डल और उनके अधिकारी तथा सदस्यों की उपस्थिति अत्यंत प्रशंसनीय रही। ऑडीटोरियम की क्षमता से कहीं ज्यादा आर्यजनों की उपस्थिति यह बता रही थी कि आर्यसमाज अपने आर्य राजनेताओं का स्वागत, अभिनंदन करने के लिए अत्यंत उत्सुक है। इस भव्य आयोजन का शुभारंभ आचार्य देव भजनोपदेशक के सारगर्भित एवं मधुर भजनों से हुआ। भजनों की भावपूर्ण प्रस्तुति से उपस्थित आर्यजनों का समूह मंत्रमुग्ध हो गया। इस समारोह के माननीय अध्यक्ष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की उपस्थिति गरिमापूर्ण थी। सभी आर्यजनों ने महाशय जी का तालियों की गड़गड़ाहट

– शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

समारोह में उपस्थित आर्यजनों का अभिवादन करते डॉ. सत्यपाल सिंह जी (सांसद, बागपत)। मंच पर विराजमान सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री नितिञ्जय चौधरी, मा. रामपाल जी, पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, श्री प्रवीण तायल जी, श्री योगेश मुंजाल जी एवं सभागार में उपस्थित आर्यजन।

दिल्ली की आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थानों की ओर से आर्य सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती, डॉ. सत्यपाल सिंह जी एवं सुश्री मीनाक्षी लेखी जी का सम्मान।

दिल्ली की पूर्व मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित का निधन

महर्षि दयानन्द सरस्वती, वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रति आपकी श्रद्धा व निष्ठा स्तुत्य एवं अनुकरणीय

स्व० श्रीमती शीला दीक्षित जी
31 मार्च, 1938 – 20 जुलाई, 2019

स्व. श्रीमती शीला दीक्षित जी के साथ एक स्मृति चित्र

भारतीय राजनीति में अपनी कुशलता और सफलता के लिए विख्यात भारत की प्रथम ऐसी महिला जो लगातार 3 बार 1998 से 2013 तक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली राज्य की मुख्यमंत्री रहीं। इसके साथ-साथ 1984 से लेकर 1989 तक कनौज लोकसभा क्षेत्र से सांसद एवं केरल राज्य की राज्यपाल के रूप में लंबे समय तक देश की समर्पण भाव से सेवा करती रहीं। ऐसी महान हस्ती के 20 जुलाई 2019 को 81 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन से आर्यसमाज और पूरे देश को गहरा आघात लगा है। श्रीमती शीला दीक्षित जी का मधुर स्वभाव और संयमित तथा संतुलित व्यवहार अपने आपमें एक आदर्श है। महर्षि दयानन्द सरस्वती, वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रति उनकी श्रद्धा व निष्ठा स्तुत्य एवं अनुकरणीय है। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण सस्थाओं की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य, पूरा आर्य समाज परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है कि महान दिवंगत पुण्य आत्मा को शांति-सदगति प्रदान करें और दीक्षित परिवार को असहनीय पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करे।

वेद-स्वाध्याय

माधुर्यमय हो जाऊँ

मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसन्दृशः।। - अथर्व० 1/34/3
ऋषिः **अथर्वा**।। देवता - **मधुवनस्पतिः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **मे** = मेरा **निक्रमणम्** = निकट जाना, प्रवृत्ति **मधुमत्** = माधुर्यमय हो तथा **मे** = मेरा **परायणम्** = दूर हटना, निवृत्ति भी **मधुमत्** = माधुर्यपूर्ण हो। मैं **वाचा** = वाणी से **मधुमत्** = माधुर्ययुक्त ही **वदामि** = बोलता हूँ, इसलिए [हे मधुस्वरूप] मैं **मधुसन्दृशः** = मधुरूप या सर्वत्र मधु को ही देखनेवाला **भूयासम्** = हो जाऊँ।

विनय - मेरा प्रत्येक कर्म मधुमत् हो। मेरा आना-जाना, मेरा पास होना और दूर होना, मेरी प्रवृत्ति और निवृत्ति, ये सब क्रियाएँ माधुर्यमय और प्रेमपूर्ण हों। लोग समझते हैं कि पास होना या आकृष्ट होना तो प्रेमयुक्त होता है, परन्तु पृथक् होना, दूर हटना प्रेमयुक्त नहीं हो सकता, परन्तु नहीं, हमारा दूर हटना भी प्रेमपूर्ण ही होना चाहिए। दूर हटने, पृथक् होने में भी हमें उस भाई के प्रति जिससे कि हम हटते हैं, अपने प्रेमभाव व माधुर्य को नहीं त्यागना चाहिए। किसी समय जुदा हो जाना, निवृत्ति, असहयोग करना भी कर्त्तव्य होता है, धर्म होता है, परन्तु उस समय अपने उस प्रतिपक्षी साथी के प्रति उसी तरह प्रेमभाव बनाये रखना भी उतना ही आवश्यक धर्म होता है, इसलिए मेरी तो जहाँ प्रत्येक निक्रमण की, निकटगमन की क्रिया भी मधुमय होती है, वहाँ मेरी प्रत्येक परायण की, हटने की क्रिया भी माधुर्यमय होती है और इस निक्रमण और परायण से बाहर मेरी और कौन-सी क्रिया रह गई? मैं वाणी से भी मीठा ही बोलता हूँ, स्थूल वाणी से, लेख की वाणी से या आचरण की वाणी से, अपनी प्रत्येक अभिव्यक्ति से मैं माधुर्य को ही बरसाता हूँ। इस प्रकार हे प्रभो! अपनी एक-एक चेष्टा में, क्रिया में, गति में तथा एक-एक वाणी में, वचन में माधुर्य को ही लाता हुआ मैं मधुसदृश बन जाऊँ। हे मधुस्वरूप! जब मैं इस प्रकार अपने जीवन में माधुर्य की उपासना करूँगा तो निश्चय से बाहर भी मेरे लिए सब कहीं माधुर्य-ही-माधुर्य हो जाएगा। मेरी दृष्टि में ऐसा माधुर्य बस जाएगा कि मैं संसार में माधुर्य के सिवाय और कुछ नहीं देख सकूँगा और तो क्या, अपने प्रति किये गये प्रहारों में, आक्षेपों में, निन्दा में, नुक्ताचीनियों में भी मैं माधुर्य-ही-माधुर्य देखूँगा। ओह, हे परम मधुवाले! तेरे माधुर्य से भरे पड़े इस संसार में मैं माधुर्य के सिवा और कुछ कैसे देख सकूँगा?

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बन्दर की नहीं; ऋषियों की सन्तान है - मनुष्य

असली राजनेता वही है जो अपने बयान पर अडिग रहे, भले ही कुछ लोग उसके विरोध में क्यों न उतर जायें। पिछले वर्ष महाराष्ट्र के औरंगाबाद में ऑल इंडिया वैदिक सम्मेलन में डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा था कि मानव के क्रमिक विकास का चार्ल्स डार्विन का सिद्धांत वैज्ञानिक रूप से गलत है। स्कूल और कॉलेज पाठ्यक्रम में इसे बदलने की जरूरत है। इंसान जब से पृथ्वी पर देखा गया है, हमेशा इंसान ही रहा है।

उनके इस बयान के बाद वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक जगत से जुड़े लोगों ने एक ऑनलाइन पत्र में सत्यपाल सिंह से अपना बयान वापस लेने को कहा था। साथ ही वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने मंत्री की इस टिप्पणी की निन्दा करते हुए कहा था कि "हम वैज्ञानिक, वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करने वाले तथा वैज्ञानिक समुदाय से जुड़े लोग आपके दावे से काफी आहत हैं।" अब एक बार फिर से सत्यपाल सिंह ने लोकसभा में एक विधेयक पर बहस में हिस्सा लेते हम भारतीय ऋषियों की संतान हैं। किन्तु हम उनकी भावना को ठेस भी नहीं पहुंचाना चाहते हैं जिनका कहना है कि वे बंदरों की संतान हैं।

किन्तु इस बार भी इस गंभीर विषय पर शोध के लिए समर्थन मिलने के बजाय राजनीति तौर पर विरोध हुआ। टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने कहा, यह बयान डार्विन के सिद्धांत के खिलाफ है। तो वहीं द्रमुक सांसद कनिमोई जी को तो इसमें भी वोटबैंक नजर आया और यह कहते हुए विरोध किया कि मेरे पूर्वज ऋषि नहीं हैं। मेरे पूर्वज बंदर हैं और मेरे माता-पिता शूद्र हैं। यानि अपने लाखों साल पहले वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हुए वैदिक दर्शन के विरोध में यह लोग डार्विन के सिद्धांत के प्रति आस्था जताए बैठे हैं।

असल में डार्विन ने 1859 में एक सिद्धांत दिया था जिसके मुताबिक 40 लाख साल पहले इंसान ऑस्ट्रेलोपिथेकस से पैदा हुआ था जिसके बाद कई चरणों में इंसान का विकास होने लगा। पहले वह बन्दर बना फिर इन्सान। आज विश्व के लगभग सभी पाठ्यक्रमों में इसी सिद्धान्त को रटाया जाता है। विरोध का कारण भी यही कि अगर कोई बच्चा अपनी परीक्षा में इस सिद्धांत को नहीं मानेगा तो उसे परीक्षक अंक नहीं देगा। अर्थात् विद्यार्थियों को अंक पाने हैं तो उन्हें बंदरों को ही अपना पूर्वज मानना पड़ेगा जबकि विज्ञान में कोई खोज या ज्ञान अंतिम नहीं है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां धारणाएं और शोध हमेशा परिवर्तन के रूप में बदलते हैं।

हालंकि डॉ. सत्यपाल सिंह द्वारा यह कोई पहला खंडन नहीं है इससे पहले वर्ष 2008 में विकासवाद के समर्थक जीव-विज्ञानी स्टूअर्ट न्यूमेन ने एक साक्षात्कार में कहा था कि नए-नए प्रकार के जीव-जंतु अचानक कैसे उत्पन्न हो गए, इसे समझाने के लिए अब विकासवाद के नए सिद्धांत की जरूरत है, जिनमें से एक होगा "डार्विन का सिद्धांत" स्टूअर्ट न्यूमेन ने उदाहरण देते हुए कहा था कि, चमगादड़ों में ध्वनि तरंग और गूँज के सहारे अपना रास्ता ढूँढ़ने की क्षमता होती है। उनकी यह खासियत किसी भी प्राचीन जीव-जंतु में साफ नजर नहीं आती, ऐसे में हम जीवन विकास के क्रम में किस जानवर को उनका पूर्वज कहेंगे?

बेशक आज डॉ. सत्यपाल सिंह का विरोध राजनीतिक कारणों और एक बनी बनाई धारणा को बचाने के लिए अनेकों लोग खड़े हो जाएं और कहें कि डॉ. सत्यपाल सिंह थ्योरी ऑफ नेचुरल सिलेक्शन पर निर्मम प्रहार कर रहे हैं। बेशक आज डॉ. सत्यपाल सिंह को अति राष्ट्रवादी कहा जाये। इसे व्यंगात्मक रूप में भी लिया जाये किन्तु यदि किसी में जरा भी वैदिक दर्शन की समझ और वैज्ञानिक चेतना है तो वे कतई नहीं मानेंगे कि डार्विन का सिद्धान्त अंतिम सत्य है। क्योंकि कल अगर दूसरा शोध हुआ तो डार्विन का सिद्धांत विज्ञान के अखाड़े में भी धूल चाटता नजर आ सकता है।

.....बेशक आज डॉ. सत्यपाल सिंह का विरोध राजनीतिक कारणों और एक बनी बनाई धारणा को बचाने के लिए अनेकों लोग खड़े हो जाएं। कहें कि डॉ. सत्यपाल सिंह थ्योरी ऑफ नेचुरल सिलेक्शन पर निर्मम प्रहार कर रहे हैं। बेशक आज डॉ. सत्यपाल सिंह को अति राष्ट्रवादी कहा जाये। इसे व्यंगात्मक भी लिया जाये किन्तु यदि किसी में जरा भी वैदिक दर्शन की समझ और वैज्ञानिक चेतना है तो वह कतई नहीं मानेंगे कि डार्विन का सिद्धान्त अंतिम सत्य है। क्योंकि कल अगर दूसरा शोध हुआ तो डार्विन का सिद्धांत विज्ञान के अखाड़े में भी धूल चाटता नजर आ सकता है।.....

असल में डार्विन ने जो सिद्धांत दिया था वह बाइबल को पढ़कर उसके विरोध में दिया था। किसी भी इन्सान के दिमाग में प्रश्न खड़े होना लाजिमी है। एक समय डार्विन के दिमाग में भी कुछ प्रश्न खड़े हुए कि हम कौन हैं? कहां से आये हैं? सृष्टि में इतनी विविधता कैसे और क्यों उत्पन्न हुई? क्या इस विविधता के पीछे कोई एक सूत्र है? जब ऐसे प्रश्नों ने डार्विन को कुरेदना शुरू किया तो उन्होंने बाइबल में इनका उत्तर खोजने का प्रयास किया। अब बाइबिल के मुताबिक तो ईश्वर ने एक ही सप्ताह में सृष्टि की रचना कर दी थी जिसमें उसने चाँद, सूरज पेड़-पौधे, जीव-जंतु, पहाड़-नदियां और मनुष्य को अलग-अलग छह दिन में बनाया था। यह सब पढ़कर डार्विन को घोर निराशा हाथ लगी कि छः दिन में यह सब नहीं हो सकता, सब कुछ धीरे-धीरे हुआ होगा। इस कारण उन्होंने विकासवाद की स्थापना कर दी। क्योंकि उनके लिखे कई पत्रों और उनकी कई किताबों में ईसाइयत के प्रति उनके विरोधी विचार साफ नजर आते हैं। अपनी जीवनी में डार्विन ने लिखा था जिन चमत्कारों का समर्थन ईसाइयत करती है उन पर यकीन करने के लिए किसी भी समझदार आदमी को प्रमाणों की आवश्यकता जरूर महसूस होगी।

इसलिए आज हमें अपनी उर्जा डॉ. सत्यपाल सिंह द्वारा कही गई बात के विरोध में नहीं लगानी चाहिए। इस विषय पर वैज्ञानिक तरीके से शोध होना चाहिए, क्योंकि डार्विन की जगह दुनिया में जब यह संदेश जायेगा कि क्रम विकास का सिद्धांत भी भारत का ही है, तो भारत का गौरव बढ़ेगा, इसलिए बहस भारत का गौरव बढ़ाने की दिशा में होनी चाहिए न कि डार्विन की थ्योरी बचाने की। वरना हम हमेशा अंग्रेजो की बनाई शिक्षा व्यवस्था में जीते रहेंगे और ऐसा ही मानते रहेंगें कि हम महान ऋषि मुनियों की संतान के बजाय बंदरों की संतान हैं।

- सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

वैदिक संस्कृति पर नया हमला है – आयुर्वैदिक अण्डे और मुर्गी

आपने भारतीय संस्कृति से लेकर हिंदी भाषा की दुर्गति देख ली होगी विश्वास कीजिए अब आयुर्वेद के दुर्दिन आरम्भ हो गये हैं। क्योंकि हाल ही में संसद के मानसून के दौरान राज्यसभा में जिस तरह आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा को लेकर आयुष मंत्रालय के कामकाज के दौरान शिवसेना के सांसद संजय राऊत ने आयुर्वैदिक मुर्गी और आयुर्वैदिक अंडे का जो जिक्र छेड़ा है, उससे लगता है कि आने वाले दिनों में अंडे और मांसाहार को भी भारत की प्राचीन परंपरा आयुर्वेद का हिस्सा बना दिया जायेगा जिस तरह आत्ममुग्ध होकर संजय राउत ने किस्सा सुनाया कि वह एक बार महाराष्ट्र के नंदूरबार नाम के आदिवासी इलाके में गए तो उन्हें खाना परोसा गया, उन्होंने पूछा कि यह क्या है? जिसके जवाब में राउत को बताया गया कि यह मुर्गी है, तो उन्होंने कहा कि मैं नहीं खाऊंगा। इसके बाद लोगों ने बताया कि यह आयुर्वैदिक मुर्गी है, जिस पोल्ट्री में मुर्गियों को रखा जाता है उन्हें सिर्फ हर्बल खिलाते हैं जैसे लौंग, तिल, उससे जो अंडा पैदा होता है वह पूरी तरह से आयुर्वैदिक है।

क्या आपने देखा या सुना है कि आयुर्वैदिक पुस्तकों में अंडे का उल्लेख हो? लेकिन इसके बावजूद भी आयुर्वैदिक अण्डों की बिक्री देश में शुरू हो चुकी है। सौभाग्य पोल्ट्री द्वारा इसे आयुर्वैदिक बताकर दक्षिण भारत में बेचा जा रहा है। बात सिर्फ अंडे तक सीमित नहीं हैं। अंडे ही नहीं बल्कि आयुर्वैदिक मुर्गियों का मीट भी देश के कई शहरों में उपलब्ध है। इनका दावा है कि मुर्गियों को मुनक्खा, किशमिश, बादाम और छुआरे आदि परोसे जा रहे तो उनसें पैदा होने वाले अंडे आयुर्वैदिक और खाने वाली मुर्गी आयुर्वैदिक हैं।

.....किसी भी राष्ट्र की सरकार का पहला कर्त्तव्य होता है उस देश की संस्कृति की रक्षा क्योंकि राष्ट्रों का वजूद उनकी संस्कृति और सभ्यताओं पर टिका होता है. यदि वहां की संस्कृति ही लुप्त हो जाये तो राष्ट्रों के लुप्त होने में समय नहीं लगता। इसलिए आज हमारे देश की सरकारों को भी सोचना होगा कि आयुर्वेद के संदर्भ में बात जब होती है तो मन में अपने आप उसकी महानता का आध्यात्मिक और धार्मिक भाव पैदा हो जाता है।.....

शायद आने वाले दिनों में गाय, भैंस, बकरी आदि का मांस भी आयुर्वेदिक बताकर देश में बेचा जाये तो कोई अचरज नहीं होना चाहिए क्योंकि इसमें यही तर्क परोसा जायेगा कि बकरी भैंस भी घास-पात या खेतों में खड़ी जड़ी बूटियां खाती हैं तो उनका मांस भी आयुर्वैदिक है? यदि आज आयुर्वैदिक अंडे और मुर्गी का विरोध नहीं हुआ तो कल उनके आयुर्वैदिक मांस के दावे को स्वीकार करना पड़ेगा। क्योंकि जब बाजार पर पूंजीवाद हावी हो जाए तो आगे ऐसी खबरें लोगों के लिए सुनना और पढना कोई नई बात नहीं रह जाएगी।

हमने पिछले वर्ष सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुक्कुट अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र के आयुर्वैदिक अंडे पर विरोध जताया था तब भी यही सवाल सरकार और संस्थान से पूछे थे कि है क्या काजू, मखाने, पिस्ता खाने वाली और शरबत पीने वाले किसी भी पशु का मीट भी आयुर्वैदिक हो सकता है?

देखा जाये तो किसी भी राष्ट्र की सरकार का पहला कर्त्तव्य होता है उस देश की संस्कृति की रक्षा क्योंकि राष्ट्रों का वजूद उनकी संस्कृति और सभ्यताओं पर टिका होता है. यदि वहां की संस्कृति ही लुप्त हो जाये तो राष्ट्रों के लुप्त होने में समय नहीं लगता। इसलिए आज हमारे देश की सरकारों को भी सोचना होगा कि आयुर्वेद के संदर्भ में बात जब होती है तो मन में अपने आप उसकी महानता का आध्यात्मिक और धार्मिक भाव पैदा हो जाता है। विश्व की सभी संस्कृतियों में, अपने देश की संस्कृति न सिर्फ प्राचीन ही है बल्कि सर्वश्रेष्ठ और बेजोड़ भी है। हमारी संस्कृति और सभ्यता के मूल स्रोत और आधार वेद हैं जो कि मानव जाति के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं और इन्हीं की एक शाखा को आयुर्वेद भी कहा जाता है। आयुर्वेद के जनक के तौर पर जिन तीन आचार्यों की गणना मुख्य रूप से होती है उनमें महर्षि चरक, सुश्रुत के बाद महर्षि वाग्भट का नाम आता है। इस ग्रन्थ का निर्माण वेदों और ऋषियों के अभिमतों तथा अनुभव के आधार पर किया गया है।

आयुर्वेद का ज्ञान बहुत ही विशाल है। इसमें ही ऐसी प्रणाली का ज्ञान है, जो मानव को निरोगी रहते हुए स्वस्थ लम्बी आयु तक जीवित रहने की लिये मार्ग प्रशस्त कराता है, जबकि मांसाहारी भोजन में तामसिकता के कारण मानव मन में अनेक विकार वासनाएं एवं अन्य जैसे लैंगिक विचार, लोभ, क्रोध आदि उत्पन्न होते हैं। शाकाहारी भोजन में सत्त्व तत्त्व अधिक मात्रा में होने के कारण वह आध्यात्मिक साधना के लिए पोषक होता है।

आयुर्वेद के आध्यात्मिक संदर्भ में यदि गहराई से झांके तो अंडे एवं मांस खाने से मन पूरी तरह से आध्यात्मिकता प्राप्त करने का विरोध करता है क्योंकि आध्यात्मिकता के द्रष्टिकोण से आयुर्वेद की अपने आप में एक पवित्रता है! आयुर्वेद के अनुसार अंडे प्राकृतिक है खाद्य पदार्थ नहीं हैं। अंडे मुर्गियों के बच्चों की तरह हैं, क्या किसी का बच्चा खाना आध्यात्म की दृष्टि से पवित्र हो सकता है? आयुर्वेद में अपवित्र खाद्य पदार्थों की अनुमति नहीं है! और कोई मुर्गी स्वाभाविक रूप से अंडे नहीं देती है। अंडा पाने के लिए मुर्गियों के कुछ हार्मोनों को उत्तेजित करने के लिए इंजेक्ट किया जाता है जो कि निस्संदेह अप्राकृतिक है। यदि आप अंडा खाते हैं, तो आप मुर्गी को पैदा होने से पहले ही मार देते हैं। आज आयुर्वेद के नाम पर बेचे जाने वाले अंडे और मांस शरीर को विकसित करने के बजाय हमारी वैदिक संस्कृति को तबाह करने की साजिश है। यदि इसे स्वीकार कर लिया तो कल आपको ये लोग यह भी स्वीकार करा देंगे कि वेदों में मांसाहार है। जब आयुर्वेद में कहीं भी मांस को भोजन या दवा की श्रेणी में नहीं रखा है तो आयुर्वेद में अंडे कहाँ से आ गये। यह बात सरकार और हम सभी को सोचनी होगी! यदि आज आयुर्वेदिक अंडे और मुर्गी को स्वीकार किया गया तो कल आयुर्वेदिक गाय के मांस को भी स्वीकार करना पड़ेगा।

– राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

जीवन परिवर्तन की एक कहानी

गतांक से आगे –

जब-जब गोविन्दसिंहजी ने इन पुस्तकों की चर्चा की, श्रीनिवासरावजी असत्य बोल देते कि मैं देख रहा हूँ। उन्हें देखने को भी इनका जी नहीं करता था। एक बार आप पूना में विष्णु शास्त्रीजी के पास बैठे हुए थे कि पलटन के एक सैनिक ने आकर उन्हें 'नमस्ते' कहा। 'नमस्ते' शब्द सुनते ही शास्त्रीजी ने क्रुद्ध होकर उन्हें तथा स्वामी दयानन्दजी को बहुत गालियाँ दीं। वह गालियाँ सुनता रहा और शान्ति से उनका खण्डन करते हुए ऋषि दयानन्दजी के विचारों का ऐसी योग्यता से मण्डन करता रहा कि श्रीमान् शास्त्री चिपलूणकरजी को मौन ही रहना पड़ा।

इस घटना के पश्चात् श्रीनिवासरावजी धाराशिव लौटे और मन लगाकर ऋषिकृत उन सब पुस्तकों को, जो उनके पास थीं, पढ़ने लगे। ऋषि ने अपने ग्रन्थों में जो प्रमाण दिये हैं, उन सबकी जाँच- पड़ताल कर ली। महीनों अध्ययन, मनन व चिन्तन किया। श्रीनिवासरावजी को निश्चय हो गया स्वामी दयानन्द एक महान् ऋषि, बड़े विद्वान्, आप्तपुरुष तथा निष्पक्ष व्यक्ति थे। ''विष्णुशास्त्री कपटी, हठी व पक्षपाती थे।'' अन्त में मैंने निश्चय किया कि स्वामीजी के सम्बंध में विष्णुशास्त्री ने जो कुछ असत्य लिखा है* उसकी पोल खोलनी चाहिए। इस बारे में मैंने बड़े-बड़े पर्यटन किये। उनके 'यक जान दोकालब' (अभिन्न) मित्रों से जो जीवित थे, परिचय बढ़ाया। उनकी कार्यवाही उनके सामने रखी। उन्होंने कह दिया कि भविष्य में स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी के विरुद्ध लेखनी नहीं उठाएँगे। इत्यादि।''+

श्रीनिवासरावजी को अब सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार की ऐसी लग्न लगी कि आपने ऋषि के 'पूना-प्रवचन' की खोज में पूना जा-जाकर एक-एक मुद्रणालय में पूछ-ताछ की। श्री विष्णुशास्त्री ने लिखा था कि ऋषि के 'पूना-प्रवचन' की मराठी (रिपोर्ट) अब नष्ट-भ्रष्ट हो चुकी है। इस उद्देश्य के लिए आप कम-से-कम पचास बार पूना गये। धाराशिव से पूना जाने के लिए उन दिनों बीस घण्टे से कम क्या लगते होंगे? इस धर्मवीर ने अन्त में 'पूना-प्रवचन' की खोज में सफलता प्राप्त करके ही चैन लिया।

यहाँ प्रसंगवश यह भी लिख दें कि आपका पण्डित लेखरामजी से क्या सम्बन्ध था? घटना इस प्रकार से है कि आप एक बार लाहौर में आर्यसमाज के उत्सव पर गये। आपके मित्र ठाकुर गोविन्दसिंहजी भी साथ ही थे। आप आर्यसमाज मन्दिर बच्छोवाली में अत्यन्त रुग्ण पड़े थे। रातभर सो न सके। धर्मवीर पण्डित लेखरामजी सारी रात इनके पास ही रहे। यह 1894 ई. की घटना है। पण्डितजी के सत्संग से श्रीनिवासरावजी पर वैदिक धर्म का और गहरा रंग चढ़ गया।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

प्रेरक प्रसंग

सत्यार्थ प्रकाश को घर-घर तक पहुंचाने का संकल्प, कैसे पूरा हुआ?

मनुष्य का मन बड़ा बहाने बाज है। अगर कोई व्यक्ति अपने किसी मित्र को किसी अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करे कि भाई जीवन क्षणभंगुर है, समय का कोई पता नहीं चलता, किसी को क्या पता कब काल का नगाड़ा कब बज जाए? थोड़ा समाज सेवा का कोई कार्य अवश्य कीजिए, किसी परोपकार में सहयोगी बन जाइए। धर्म के प्रचार-प्रसार में अपनी कोई मुख्य भूमिका निश्चित कीजिए। तन-मन, धन से परमार्थ कीजिए दुनिया में कुछ भी साथ नहीं जाता, अपने हाथों से कुछ ऐसे पुण्य कर्म कीजिए, जो सेवा-साधना के क्षेत्र में प्रमाण बन जाए। इन सब बातों को व्यक्ति बड़े अनमने मन से सुनता है और तपाक से कहता है कि आपकी सारी बातें तो ठीक हैं, ये तो मुझे भी पता है। लेकिन क्या करूं मुझे समय ही नहीं मिलता, बहुत व्यस्त जीवन है, घर के कार्य, बच्चों की जिम्मेदारी, नौकरी और व्यवसाय का बोझ इतना है कि मरने के लिए भी टाइम कहां है? इसका मतलब है कि कुछ न करने के लाख बहाने, करने वाले का केवल और केवल संकल्प ही उसे महान बनाता है।

पंजाब प्रांत के एक गांव के पोस्टमैन का आदर्श उदाहरण देखिए। वह पोस्टमैन महर्षि देव दयानंद जी के प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश से बहुत प्रभावित था। उसकी सोच थी कि इस महान ग्रंथ की ज्ञान किरणें घर-घर तक पहुंचानी चाहिए। वह सारे दिन घर-घर जाकर पत्र बांटता और सुबह-शाम सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करता। लेकिन सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार के लिए उसके पास न समय बचता और न ही इसका कोई खास तरीका उसे समझ आता। किंतु उसके मन में यह शुभ विचार बार-बार उथल-पुथल मचाता था कि इस अमृत तुल्य ग्रंथ का प्रसाद घर-घर तक पहुंचाना ही है और मैं जरूर पहुंचाऊंगा, संसार में कोई भी सेवा तन-धन से तभी संभव होती है, जब मन में सेवा का सच्चा भाव हो।

इस पोस्टमैन ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार की एक दिव्य योजना बनाई और उसको बड़े सुनियोजित तरीके से चरितार्थ भी किया। इस महान सेवक ने दो सत्यार्थ प्रकाश अपने बैग में रख लिए। यह जहां भी जाता सत्यार्थ प्रकाश की दो प्रतियां अपने साथ हमेशा रखता। इसका काम तो घर-घर जाकर पत्र बांटना था। जिस घर में यह पत्र देने के लिए जाता, उसका दरवाजा खटखटाता और जैसे ही घर के अंदर से उस घर का सदस्य पत्र लेने बाहर आता तो वह पोस्टमैन उसे प्रेम से नमस्ते करके उसका पत्र दे देता और फिर विनम्रता से कहता भाई, मेरे पास एक पुस्तक है, क्या आप मुझे इसका एक पैराग्राफ पढ़कर समझा देंगे? आपका मेरे ऊपर बड़ा उपकार होगा, पढ़ना तो मैं भी जानता हूं, लेकिन मुझे ज्यादा समझ नहीं आता, अगर आप इसे पढ़कर मुझे थोड़ा समझा देंगे तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।

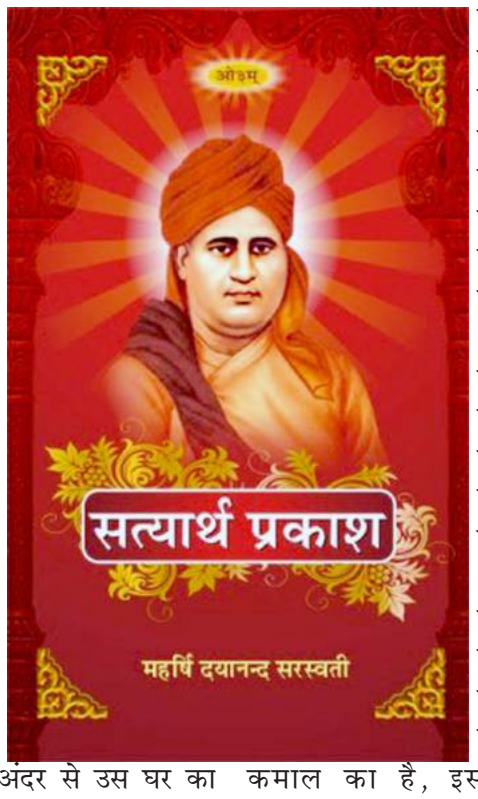

पोस्टमैन पहले से ही सत्यार्थ प्रकाश में निशान लगाकर रखता था, क्योंकि वह समझता था कि इस व्यक्ति को कौन-सी बात ज्यादा प्रभावित करेगी। पोस्टमैन के हाथों से सत्यार्थ प्रकाश लेकर वह व्यक्ति पढ़कर सुनाने लगा। सत्यार्थ प्रकाश तो प्रकाश का पुंज है, उसको कहीं से भी खोलिए, पढ़िए, समझिए, उसमें से तो रोशनी मिलेगी। जैसे मिश्री का टुकड़ा होता है, उसे किधर से भी चखिए, वह तो मीठी ही लगेगी। लेकिन फिर भी वह पोस्टमैन हर व्यक्ति की सोच के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठों में निशान लगाकर रखता था। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने वाले उस व्यक्ति के द्वारा जो समझाया जाता, उसे पोस्टमैन बड़े ध्यान से सुनता रहता था। बाद में वह पाठक कहता कि भाई यह ग्रंथ तो बड़े कमाल का है, इसमें तो बहुत अच्छी-अच्छी बातें बताई गई हैं। इसे कहां से लाए हैं आप? फिर पोस्टमैन कहता कि अगर आपको पढ़कर अच्छा लग रहा है तो आप इसे कुछ दिन के लिए अपने पास रख सकते हैं। मेरे पास इसकी एक प्रति और है, मैं बाद में आप से ले लूंगा। लेकिन आप सत्यार्थ प्रकाश को ऐसे ही मत रख देना, आप इसे पढ़ना जरूर। वह पाठक व्यक्ति कहता है कि भाई मेरा यह आपसे वायदा है, मैं इसे स्वयं भी पढ़ूंगा और अपने परिवार को भी पढ़कर सुनाऊंगा, यह इतनी अच्छी पुस्तक है, इसे तो हर व्यक्ति को पढ़ना ही चाहिए।

पोस्टमैन फिर दूसरे घर में इसी तरह से पुनः प्रयोग करता है। दूसरा सत्यार्थ प्रकाश दूसरे व्यक्ति को दे देता है। फिर कुछ दिन बाद पहले व्यक्ति से पूछता है कि आपने सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय किया, आपको कैसा अनुभव हुआ? आपको कौन-कौन सी मुख्य शिक्षाएं प्राप्त हुई, उसमें से अगर आप मुझे कुछ सार में बताएं तो बड़ा अच्छा होगा। सत्यार्थ प्रकाश का वह प्रबुद्ध पाठक सत्यार्थ प्रकाश की प्रशंसा करते हुए कहता है- पोस्टमैन साहब, सत्यार्थ प्रकाश कोई साधारण पुस्तक मात्र नहीं है, यह तो व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया के लिए अमृत है, अंधेरों से प्रकाश की ओर जाने की पावन प्रेरणा है, सत्यार्थ प्रकाश सही अर्थों में जीवन जीने की कला सिखाता है, इसे पढ़कर मैं धन्य हुआ और मेरे परिवार में जागृति आई है, मैं आपका सदैव आभारी रहूंगा।

इसी तरह वह पोस्टमैन सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार-प्रसार करता रहा और उसने धीरे-धीरे कई गांवों में घर-घर सत्यार्थ प्रकाश का ज्ञान पहुंचा दिया, उसने अपना संकल्प पूरा कर दिया, अनेक लोगों के जीवन में उजाला कर दिया। वह अपने कर्त्तव्य को भी निभाता रहा और परोपकार भी करता रहा, इस तरह उसकी योग्यता और कुशलता निरंतर बढ़ती गई। इससे ज्ञात होता है कि अगर व्यक्ति कोई शुभ संकल्प धारण करे और उसे दृढ़निश्चय के साथ निभाए तो दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है, कोई भी व्यक्ति उस पोस्टमैन की तरह अपना कार्य करते-करते सत्यार्थ का प्रचार-प्रसार कर सकता है, पूरी दुनिया के लिए उदाहरण बन सकता है। जहां चाह, वहां राह। विपरीत परिस्थितियों में भी अगर मन में सच्ची लगन है, मानव सेवा का संकल्प है तो व्यक्ति लाख रुकावटों के बावजूद भी सेवा पथ पर आगे बढ़ता जाता है।

- आचार्य अनिल शास्त्री

लोकसभा अध्यक्ष से शिष्टाचार भेंट एवं महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सैन्टर द्वारा साक्षात्कार

आर्यसमाज वैचारिक क्रांति का अग्रणी संगठन है - ओम बिरला, लोकसभा अध्यक्ष

22 जुलाई 2019 को प्रातःकाल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य केंद्रीय सभा के अधिकारियों के एक शिष्ट मण्डल ने लोक सभा अध्यक्ष श्रीमान् ओम बिरला जी के दिल्ली स्थित उनके निवास पर भेंट की। श्री अर्जुन देव चड्डा जी, कोटा के नेतृत्व में सतीश चड्डा जी, महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा, श्री जोगेंद्रर खट्टर जी, श्री एस.पी.सिंह मंत्री जी,आर्य केंद्रीय सभा, श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी, श्री वेद प्रकाश जी, श्री देवेन्द्र सचदेवा, उत्तर पश्चिमी वेद प्रचार मण्डल, श्री बलदेव सचदेवा, श्री नीरज आर्य जी व श्री राकेश आर्य जी, पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, श्री किशन आर्य जी, कोटा ने भेंट की। सबसे पहले राजस्थानी साफा पहनाकर व पीत वस्त्र पहनाकर, मोतियों की माला व असमियां टोपी से उनका हार्दिक स्वागत किया गया तथा उन्हें ओम्, एक पीतल का स्मृति चिह्न भेंटकर अभिनन्दन किया। इसके उपरांत श्री अर्जुनदेव चड्डा ने आर्य प्रतिनिधियों का परिचय ओम बिरला जी से कराया। माननीय ओम बिरला जी ने कहा कि सभी आर्यों से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई की। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि मण्डल को सम्बोधित करते हुए माननीय ओम बिरला जी ने कहा कि आर्य समाज वैचारिक क्रांति है तथा युवाओं को महर्षि दयानंद के विचारों से प्रेरित करता रहता है। पृथ्वी के आखिरी मानव तक वेद तथा महर्षि के विचार प्रेरित करते रहेंगे।

पर्यावरण शुद्धि हेतु आर्य समाज कोटा की ओर से अर्जुन देव चड्डा जी द्वारा कोटा से लाया गया रुद्राक्ष, अर्जुन तथा आंवले के पौधे लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी को आर्य प्रतिनिधि मण्डल की ओर से भेंट किए गए।

- सतीश चड्डा, महामन्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

के साथ अभिनंदन किया। मंच पर उपस्थित श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, कोषाध्यक्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, सासंद, बागपत लोकसभा क्षेत्र, स्वामी सुमेधानंद जी, सांसद, सीकर, राजस्थान, श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी, सासंद, नई दिल्ली, श्री योगेश मुजांल जी, प्रसिद्ध उद्योगपति, श्री आनन्द कुमार चौहान जी, एम.टी. युनिवर्सिटी, श्री प्रवीण तायल जी प्रसिद्ध समाजसेवी, श्री आदेश गुप्ता जी, पूर्व महापौर, श्री भारतभूषण मदान जी, श्री विपिन मल्होत्रा एवं अन्य अनेक महानुभावों का आर्यजनों ने भावपूर्ण स्वागत किया।

सांसदों एवं आर्यजनों को आशीर्वाद देते महाशय धर्मपाल जी, साथ में हैं डॉ. सत्यपाल सिंह जी एवं स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी। इस अवसर पर सम्बोधित करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, हरियाणा सभा के प्रधान मा. रामपाल जी, समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री योगेश मुंजाल जी, एमिटी शिक्षण संस्थान से श्री आनन्द कुमार चौहान जी।

अतिथि रूप में उपस्थित श्री भारत भूषण मदान जी एवं श्री विपिन मल्होत्रा जी का सम्मान।

सम्मान समारोह के अवसर पर आर्य गुरुकुल रानी बाग के छात्रों द्वारा प्रस्तुत नाटिका का दृश्य। (नीचे) महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल शादीखामपुर द्वारा प्रस्तुत नमस्ते नाटिका।

आर्य हार्दिक अभिनंदन समारोह के मंच का संचालन करते हुए दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने आर्यसमाज के पुराने राजनेताओं की महानता का वर्णन करते हुए भारत के पांचवे प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह एवं पूर्व सासंद स्वामी रामवेश्वरानंद जी का उदाहरण देते हुए कहा कि भारतीय राजनीति में आर्य नेताओं ने जो काम किए हैं। वे वर्तमान आर्य राजनेताओं के लिए प्रेरणा के आदर्श हैं। स्वामी रामेश्वरानंद जी ने संसद भवन के अंदर बीड़ी, सिगरेट पीने वाले सासंदों के खिलाफ हवनकुण्ड लेकर यज्ञ करने का प्रेरणादायक कार्य किया था। हमारा इतिहास बहुत उज्ज्वल है और भविष्य भी महान होगा। ऐसा हमें विश्वास है। इस अवसर पर उपस्थित महानुभावों ने बड़े ही प्रेरणाप्रद एवं सारगर्भित उद्बोधन दिए।

आर्य हार्दिक अभिनंदन समारोह में आर्य महानुभावों के प्रेरक उद्बोधन

प्रसिद्ध उद्योगपति महान समाजसेवी श्री योगेश मुंजाल जी ने आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि देश के श्रेष्ठ नेतृत्व को सहयोग दें और हमारे राजनेताओं को भी यह याद रखना चाहिए कि हम आर्य समाजी हैं। अच्छा सोचें, अच्छा करें और अच्छे दिन लेकर आएं। आर्यसमाज एक श्रेष्ठ संस्था है। इसके हर प्रतिनिधि का समाज में अपना श्रेष्ठ देना चाहिए। इस क्रम में आनन्द कुमार चौहान जी ने कहा कि आज एमटी परिवार अगर सफलता की बुलंदियों को छू रहा है, आज एम.टी. शिक्षण संस्थान के माध्यम से 1,70,000 विद्यार्थी अगर अपने जीवन का निर्माण कर रहे हैं तो इसके पीछे सबसे बड़ा हेतु केवल आर्यसमाज है। आर्यसमाज के कारण ही हम शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। करोलबाग क्षेत्र बीजेपी से प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री भारतभूषण मदान जी ने आर्यसमाज के नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए श्री विनय आर्य जी एवं श्री धर्मपाल आर्य जी को साधारण वेश में असाधारण प्रतिभा के धनी बताते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि आर्यसमाज से सम्बन्ध रखने वाला हर व्यक्ति सुमार्ग पर चलता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मास्टर रामपाल जी ने इस आयोजन की प्रशंसा करते हुए गुजरात प्रांत के गवर्नर आचार्य देवव्रत जी के आर्य नियम और सिद्धांतों का हवाला देते हुए पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के शिमला राज भवन में पधारने पर आचार्य जी की तरफ से भोजन की सात्विकता का प्रमाण देते हुए कहा कि आर्यनेता कहीं पर भी हों वे अपने सिद्धांतो, मान्यताओं से समझौता कभी नहीं करते।

सीकर, राजस्थान से लगातार दूसरी बार पहले से 50000 अधिक वोटों से निर्वाचित सांसद स्वामी सुमेधानंद जी आर्यसमाज की महान विभूति हैं। आज जब आपका अभिनंदन करने के लिए आर्यजन उमंग, उत्साह और उल्लास से भारी संख्या में उपस्थित थे, तो आपने सभी का अभिवादन किया और आर्यजनों ने खड़े होकर आपके सम्मान में जोरदार कर्तल ध्वनि कर सम्मान व्यक्त किया। स्वामी जी ने इस अवसर पर महर्षि दयानंद सरस्वती के उपकारों को स्मरण करते हुए कहा कि आर्यसमाज का स्नेह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। महर्षि दयानंद सरस्वती मेरी प्रेरणा के प्रकाश पुंज हैं। आर्यजनों को राजनीति में आने वाले लोगों का सहयोग करना चाहिए। आर्यसमाज का और महर्षि दयानंद का ऋण हम सब के ऊपर है। हमें उसे चुकाने की कोशिश करनी चाहिए। महर्षि ने प्राणीमात्र के ऊपर उपकार किया है। इस अवसर पर स्वामी जी ने महर्षि दयानंद जी द्वारा राजस्थान में किए गए उपकारों का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा कि राजस्थान के नरेंद्र सिंह, शाहपुरा नरेश, सज्जन सिंह आदि को माध्यम बनाकर स्वामी जी ने अविस्मरणीय और उल्लेखनीय कार्य राजस्थान में किए। हम सबको आर्यसमाज के 150वें स्थापना दिवस, स्वामी दयानंद जी के 200 वें जन्मोत्सव आदि प्रमुख कार्यक्रमों के लिए तैयारी करनी चाहिए।

आर्यसमाज की विचारधारा, वेद और महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को बड़े से बड़े मंच पर धड़ल्ले के साथ कहने के लिए विख्यात, महान यशस्वी आर्य सासंद डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने इस अवसर पर अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि मेरा जीवन, पद प्रतिष्ठा और सम्मान महर्षि दयानंद और उनकी प्रमुख कृति सत्यार्थ प्रकाश को समर्पित है। दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति का तंत्र राजनीति है और सारे धर्म राष्ट्र धर्म में सम्माहित हो जाते हैं। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अच्छी राजनीति होनी ही चाहिए। पूरी संसद में हम दो आर्य सिद्धांतों को मानने वाले सासंद हैं। हमारी भी एक मर्यादा होती है। किंतु आर्यसमाज और महर्षि दयानंद के विचारों को हम पूरी शक्ति से उठाते रहे हैं और उठाते रहेंगे। आज के समय में केवल जय बोलने से काम नहीं चलेगा। हमें आगे बढ़कर राजनीति में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी होगी। आर्यसमाज का ऋण हम सबके ऊपर है। सत्य की राह पर चलने वाला व्यक्ति परेशान हो सकता है लेकिन कभी पराजित नहीं हो सकता। सूरज की रोशनी को बादल ढक सकते हैं लेकिन वे रोक नहीं सकते। धर्म वेद का परम प्रमाण है। वेद के सम्मान के लिए सरकार की तरफ से 1,00,000 का एक पुरस्कार दिया जाता था उसे हमने 5 लाख के 11 पुरस्कारों में परिवर्तित किया और 1,00,000 के अब 5 पुरस्कार भी दिए जाते है और यह पुरस्कार अब महर्षि दयानंद के नाम से दिए जाएंगे। आर्यजनों के इस स्नेह सम्मान के लिए मैं धन्यवाद करता हूं लेकिन साथ मैं ये भी कहना चाहता हूं कि हमें महर्षि दयानंद के सपनों को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए। आर्य समाज एक आंदोलन के रूप में खड़ा हो और मानव जीवन को श्रेष्ठ मार्ग पर चलने के लिए कोशिश करे। ज्ञात हो कि डॉ. सत्यपाल सिंह भी गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति के पद पर नियुक्त हैं। आपने गुरुकुल कांगड़ी के उत्थान हेतु स्वामी श्रद्धानंद के सपनों को साकार करने का संकल्प लेते हुए आर्य जगत के सभी महापुरुषों को नमन किया और सभी का धन्यवाद किया।

– *जारी पृष्ठ 7 पर*

Swami Dayanand, Aryasamaj and his contribution in Dalit upliftment

- Dr. Vivek Arya

Swami Dayanand was great scholar of his times who started reformation movement in our country in view of degradation of Vedic values and propagation of various myths in the name of dharma. Child marriage, polygamy, casteism, Brahmins supremacy, ignorance towards Vedic scriptures, killing of cow, lack of education, poverty, unemployment, superstitions etc. were common and widely prevalent during his time. Worst among them was Casteism or Jativad which had created differences among humans. Almighty God gave birth to all of us; the humans degraded themselves by claiming themselves as superior or inferior on the basis of birth in a certain caste. During his times a rigid caste system was in practice, the Brahmins enjoyed supremacy over others. The condition of the shudras was deplorable and womanhood was also considered as inferior. The Muslims and Christians were proselytizing the Hindus and consequently the Hindu fold was becoming thinner day by day. Dayanand minutely observed these ill practices and founded that casteism was not even mentioned in Vedas and whatever was anti Vedic was false for Dayanand.

Casteism denied a great number of shudras social justice. It caused a great loss to society. Casteism had shut the door to competition and had given rise to class jealousies and animosities.

Swami Dayanand was the first in modern India to claim that we all are one Jati i.e. humans and there exists no caste, what exists is Varn Vyavastha which is entirely based on qualities, merits of any person not on the basis of birth.

Ignorant pundits started misinterpretations of famous mantra of purush sukt to prove casteism in Vedas. The mantra was translated as "Brahmans were born out of the Brahma's mouth, Kshatriyas out of the arms, Vaishyas out of his stomach and Shudras out of Brahma's feet. " so, Shudras being Brahma's feet are inferior in society.

Swami Dayanand,the great Vedic scholar propagated that Brahmins are like head as they guide the society, Kshatriyas are like arms as they protect the society, Vaishyas are like stomach as they help prospers the society and Shudras are like feet as they serve the society. This classification is based on actions not on the basis of birth.

Swami Ji acknowledged the division of society into four classes. He in chapter four of his famous work Satyarth Prakash writes that a Brahmin must be righteous, truthful, learned of the Vedas and of all knowledge. A Kshatriya must be endowed with the virtue of protecting people, fearlessness, boldness and dutifulness. A Vaishya should serve society by doing business, going overseas, farming etc. Shudras should serve Brahmin, Kshatriya and Vaishya without disrespect, jealousy and conceit and they all must respect one another with equal honour and rights.

All these are Varna's not castes and they are not based on basis of birth. The individuals should be placed in different classes according to their qualifications, accomplishments and character. According to Swami Dayanand shudras can be promoted to Brahmins on the basis of their qualities. A person who is born to a Brahmin and is engaged in meat eating, adultery and is uneducated is a Shudra while a person born to a Shudra and educated, qualified and learned in Vedas should be promoted to be a Brahmin. In olden days there was no casteism and society was based on Varn Vyavastha and so our country Aryavrata was supreme in the world. Later on when people left learning Vedas, few Brahmins started this ill practice of casteism. They even confined the Vedic knowledge to their own families only so that no others would ever know the truth.

Swami Ji holds that people will advance by adopting this system as higher class will be in constant fear of their sons being degraded into lower classes whilst the lower class will be promoted to exert them to enlist into the superseding classes. He also exhorted the rulers and responsible persons to see that all the four classes performed their duties honestly. The caste system according to swami ji was not religious or natural distinction but a socio-economic institution, castes were not created by god. The Varn Vyavastha is a social order for better discharge of different functions.

Swami Ji was so much perturbed by the degrading condition of the depressed classes that he sometimes spent sleepless nights worrying over their lot. "The Christians are doing all they can to convert the kolis and bhils, depressed classes of the Hindus, while the religious leaders of the Hindus are sleeping like kumbhkaran." He condemned the atrocious treatment meted out to the lower classes and publically declared that all men are equal. He taught the truth that none was born to rule and none to be ruled. He explained that crores of people had become Muslims or were being converted to Christianity and unless the nation was aroused by candid advice and unless the society was purged of evils, there was little doubt that the Hindu race would die. He advocated that Brahmans, Kshatriyas and Vaishyas should eat food cooked by Shudras.

To be Continue.....

वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी - एक वृहद योजना

दिल्ली सभा के इस सृजनात्मक अभियान में प्रत्येक आर्य व्यक्ति, परिवार, संस्था और समाज वैदिक साहित्य को एकत्रित करने में पूरी शक्ति से करें सहयोग प्रदान

किसी भी संस्था या संगठन के विचार, मान्यताएं और परंपराओं के प्राण उसके साहित्य-पुस्तकों में समाए होते हैं। वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के उत्थान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी से लेकर पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानंद, स्वामी स्वतंत्रानंद, महात्मा नारायण स्वामी, पंडित तुलसीराम, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, गंगाप्रसाद उपाध्याय, आर्यमुनि इत्यादि हमारे महापुरुषों ने वेदज्ञान की अविरल धारा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए कठिन परिश्रम किया और अत्यधिक मात्रा में साहित्य सृजन कर पुस्तकों के रूप में उसे वितरित भी किया। इसी ज्ञान संपदा की बदौलत आज हम देश के कोने-कोने में और विश्व के 32 देशों तक विस्तार कर पाए हैं। इस क्रम को लगातार आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए पंडित लेखराम ने कहा था कि विचारशीलता और लेखन का कार्य आर्यसमाज की ओर से निरंतर चलते रहना चाहिए। जिसके परिणामस्वरूप आर्य समाज के सैकड़ों सुप्रसिद्ध संन्यासियों और विद्वानों ने वैदिक साहित्य कोष की निरंतर अभिवृद्धि की। किंतु आज हामरे महापुरुषों के द्वारा निर्मित कई पुस्तकें ऐसी हैं जो

बहते समय के प्रवाह के साथ-साथ धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं। बहुत सी पुस्तकों को किन्हीं कारणों से प्रकाशित नहीं किया जा रहा है और इस तरह बहुत-सी पुस्तकें जो अत्यंत उपयोगी थीं, उनका मिलना लगातार बहुत कठिन होता जा रहा है।

इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कई वर्षों पूर्व "वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी" की योजना का शुभारंभ किया था और सभी आर्य समाजों एवं आर्य जनों से अनुरोध किया था कि आपके घर की अथवा आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की लाइब्रेरी में कहीं पर भी दुर्लभ वैदिक साहित्य उपलब्ध हो तो कृपया उसे दिल्ली सभा द्वारा संचालित वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी में पहुंचाने की कृपा करें। बहुत से आर्यजनों ने बहुत-सी उपयोगी पुस्तकें पहुंचाई भी हैं, उन सभी महानुभावों का धन्यवाद। लेकिन सभा का यह कार्य अभी अधूरा है, सभा की यह वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी की योजना बड़ी व्यापक है, इसके पीछे भावना यही है कि-

1) आर्य समाज का संपूर्ण वैदिक साहित्य एक स्थान पर पुस्तकों के रूप में हार्ड कापी और साफ्ट कापी दोनों फार्मेट में उपलब्ध हो और यह सारी वैदिक ज्ञान संपदा आर्य समाज की वैबसाइट पर भी उपलब्ध हो।

2) जिसके परिणाम स्वरूप संपूर्ण विश्व में कहीं भी, कभी भी और कोई भी आर्य सज्जन जिस किसी भी पुस्तक का स्वाध्याय करना चाहे अथवा किसी पुस्तक के रेफरेंस से कोई बात प्रमाणित करना चाहे तो वह तुरंत आर्य समाज की वैबसाइट पर जाकर ई.संस्करण द्वारा कर सके।

3) इस तरह आर्य समाज का प्रचार प्रसार भी तीव्रगति से संभव होगा, हमारे पूर्वजों ने जिस लोकोपकारी भावना से कठिन तप करके पुस्तकों की रचना की थी उसकी रक्षा होगी और हमारी अमूल्य निधि वैदिक ज्ञानधारा भी सुरक्षित होगी।

4) इसके साथ साथ आधुनिक तकनीक का उपयोग करके हम देश की युवा पीढ़ि को आर्य विचारधारा और वैदिक ज्ञानधारा से सरलता से जोड़ने मे सफल होंगे।

5) बंधुओ, आज समाज तीव्र गति से बदलाव की ओर बढ़ रहा है, इस परिवर्तन की धारा में हमें अपने वैदिक विचार-मान्यताएं और परंपराओं को सहेजना भी है और उन्हें प्रसारित भी करना है। इसी भावना और कामना को साकार करने में वैदिक रेफरेंस लाइब्रेरी बहुत बड़ी भूमिका निभाएगी।

अत: इस विशेष अनुरोध पर गहराई से चिंतन करें, इसके महत्व को समझें और वैदिक साहित्य को वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी में अपना नाम, पता एवं सम्पर्क सूत्र लिखकर रजिस्टर्ड डाक/कोरियर द्वारा **"प्रबन्धक, वैदिक रैफरेंस लाईब्रेरी"** के नाम - **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

- विनय आर्य, महामंत्री

पृष्ठ 5 का शेष

आर्य सांसदों का अभिनंदन

आर्य हार्दिक अभिनंदन समारोह में स्वामी सुमेधानंद, डॉ. सत्यपाल जी, श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी इत्यादि महानुभावों का भावपूर्ण स्वागत-सम्मान किया गया। सम्मान करने वालो में इस सभा के अध्यक्ष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री योगेश मुंजाल जी, श्री आनन्द कुमार चौहान जी, श्री प्रवीण तायल जी, श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, श्री आदेश गुप्ता जी, श्री नितिञ्जय चौधरी जी, श्री भारतभूषण मदान जी, श्री विपिन मल्होत्रा, श्री सतीश चड्डा जी, श्री अरूण प्रकाश वर्मा जी, श्री योगेश आर्य जी, श्री नीरज आर्य जी, श्री सुरेंद्र चौधरी जी, श्री सुरेश चंद गुप्ता जी, श्री शिव कुमार मदान जी, श्री यशपाल आर्य जी, श्री संजय आर्य जी, श्री राकेश आर्य जी आदि महानुभाव संयुक्त रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आधुनिक प्रवेश में आर्य समाज की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। धर्म में राजनीति नहीं होनी चाहिए किन्तु राजनीति में धर्म की भावना बहुत जरूरी है। आर्य सासंद राष्टीय् राजनीति में धर्म के रक्षक के रूप में एक स्तम्भ के समान खड़े हैं। सभी महानुभावों को अपने आर्य राजनेताओं का सम्मान के साथ-साथ सहयोग भी करना चाहिए। विनय आर्य जी ने मंच संचालन के बीच-बीच में उपस्थित राजनेताओं को सामाजिक स्तर पर हो रहे धर्म के नाम पर ढोंग और पाखण्ड का हवाला देते हुए कहा कि आजकल तथाकथित धर्म गुरुओं के एक-एक पेज के बड़े-बड़े विज्ञापन प्रकाशित हो रहे हैं। राज्य सरकारों की तरफ से भी मनोकामना पूर्ति के स्थलों का प्रचार किया जा रहा है। इन सब बातों पर हमें ध्यान देना चाहिए। महाराष्ट्र सरकार ने धर्म के नाम पर भ्रष्टाचार विरोधी कानून बनाकर एक अच्छी पहल की है। उसे पूरे भारत में लागू करना चाहिए। हिंदी और संस्कृत भाषा के वर्चस्व को बचाने की लड़ाई भी आर्य समाज को लड़नी होगी। इस अवसर पर पदम्भूषण महाशय धर्मपाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मेरे गले से ज्यादा आवाज नहीं निकलती लेकिन यहां उपस्थित सभी बच्चे, युवा, स्त्री-पुरुषों का मैं अभिवादन और अभिनंदन करता हूं। आप सबको देखकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। आप सब मेरे पोती-पोतौं के समान हैं। मैं अभी बूढ़ा नहीं हुआ, अभी मैं जवान हूं। सब सेवा के वृक्ष बने और सेवा के पथ पर आगे बढ़ें। मेरा सभी को आशीर्वाद है। इस अवसर पर महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल शादी खानपुर तथा आर्य समाज रानीबाग और सैनिक विहार के छात्र-छात्राओं ने प्रेरक नाटिकाएं प्रस्तुत कर समाज को महर्षि दयानंद के बताए हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान की। श्रीमती वीना आर्या जी एवं श्रीमती नीरज मैंदीरत्ता जी का बच्चों की प्रस्तुति में विशेष योगदान रहा। श्री सतीश चड्डा जी, महामन्त्री, आर्य केंद्रीय सभा ने सभी आर्यजनों का धन्यवाद किया तथा श्रीमती उषा किरण जी द्वारा शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। - *संयोजक*

आर्य दैनन्दिनी - डायरी में नाम, फोन नं. प्रकाशित कराने हेतु

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य प्रकाशन द्वारा आर्य दैनन्दिनी डायरी 2020 का प्रकाशन किया जा रहा है। अत: आर्यजगत के संन्यासी, विद्वान, विदूषी, भजनोपदेशक तथा गुरुकुलों के नाम, फोन नं. सहित 31 अगस्त 2019 तक अपेक्षित हैं। ईमेल:- aryaprakashan@gmail.com पर भेजने की कृपा करें। जिससे समय पर प्रकाशन का कार्य पूर्ण हो सके।

- *व्यवस्थापक*

प्रवेश आरंभ

दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार में चतुर्वर्षीय पाठ्यक्रम में विद्या प्रवेशिका, विद्यारत्न, विद्यानिधि, विद्या वाचस्पति के प्रवेश 1 जुलाई 2019 से आरंभ हो गए हैं, इसके लिए प्रवेशार्थी 31 जुलाई 2019 तक आवेदन कर सकते हैं। साक्षात्कार पर आधारित चयन किए गए प्रवेशार्थियों को दयानन्द ब्राह्म विद्यालय, हिसार की ओर से आवास, भोजन, पुस्तकें तथा अन्य आवश्यक सुविधाएं नि:शुल्क प्रदान की जाएंगी। केवल प्रवेश के समय स्वल्प राशि देनी आवश्यक होगी। संपर्क करें-

- *डॉ. प्रमोद योगार्थी प्राचार्य*
09416544775, 01662-231920

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

समाजसेवी अर्जुनदेव चड्डा जी ने जन्मदिन मनाया सेवाभाव से

कोटा, राजस्थान 17 जुलाई 2019 को अर्जुनदेव चड्डा जी ने अपना 76 वां जन्मदिन मधु स्मृति संस्थान के निराश्रित बच्चों के साथ मनाया। इस अवसर पर बच्चों को चड्डा जी ने मिठाई, बिस्किट और चिप्स आदि उपहार में दिए। बच्चों ने आपके लिए दीर्घ आयु की कामना की। संस्थान की ओर से चड्डा जी को माल्यार्पण कर शाल तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया और अनेक लोगों ने अपनी शुभकामनाएं दी। डी.ए.वी. स्कूल कोटा के धर्म शिक्षक आचार्य शोभाराम आर्य, संस्थान की निदेशिका बृजबाला निर्भीक, आर्य समाज महावीर नगर के मंत्री राधावल्लभ राठौर, वेदमित्र वैदिक, किशन आर्य, रामभरोस आर्य, श्रीमती बीमलेश आर्या आदि ने भी शुभकामनाएं दी। बच्चों ने हैप्पी बर्थडे का गीत गाया। इसके साथ-साथ 18 जुलाई को अर्जुन देव चड्डा जी ने अपने घर पर राष्ट्र कल्याण यज्ञ का आयोजन किया। जिसमें आर्यावर्त केसरी के सम्पादक डॉ. अशोक कुमार आर्य, यज्ञ की ब्रह्मा डॉ. वीना रोदगी, शोभाराम प्रेमी, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री आदि महानुभावों ने यज्ञ में आहुति दी।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज कृष्ण नगर

दिल्ली-110051

प्रधान : श्री यशपाल शर्मा
मन्त्री : श्री राज कुमार शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री विजय बजाज

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (वेद)

आर्यन अभिनन्दन समारोह-2019

1. वैदिक वाङमय पर विशिष्ट कार्य कर चुके विद्वान एवं विदुषियां
2. राष्ट्रपति अथवा किसी सरकार द्वारा सम्मानित आर्य विद्वान एवं विदुषियां
3. आर्य वीरदल एवं वीरांगना दल को शिक्षित करने वाले शिक्षक-शिक्षिकाएं

पूर्ण विवरण सहित भेजें

सितम्बर मास में दिल्ली में सम्मान समारोह सम्पन्न होगा। अपना पूर्ण परिचय निम्न पते पर शीघ्रतिशीघ्र भेजने की कृपा करें।

ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट

ए-41, द्वितीय फ्लोर, लाजपत नगर-द्वितीय, (निकट- मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली- 110024
फोन : 011-29842527, 011-45791152 9599107207
Email : rashtranirmanparty@gmail.com

कन्या विद्यालय में आयकर विभाग का जागृति अभियान

18 जुलाई 2019 को आर्य कन्या विद्यालय समिति अलवर राजस्थान द्वारा संचालित आर्य बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं आर्य पब्लिक सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल की छात्राओं को आयकर विभाग के प्रधान आयुक्त श्री विनोद कुमार तिवारी जी ने महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान करते हुए ईमानदारी से कर चुकाने के लाभ बताए। इस अवसर पर आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता ने आयकर विभाग के इस अभियान की प्रशंसा की और मंत्री श्री प्रदीप कुमार आर्य ने सबका धन्यवाद किया।

शोक समाचार

आचार्य विद्याभानु शास्त्री जी का निधन

जम्मू-कश्मीर के वैदिक विद्वान आचार्य विद्याभानु शास्त्री जी का 20 जुलाई, 2019 को जम्मू में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 21 जुलाई को जोगी गेट शमशान पर किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 23 जुलाई को आर्यसमाज केटली कालोनी, रिहाड़ी, जम्मू में सम्पन्न हुई, जिसमें जम्मू-कश्मीर सभा के अधिकारियों के साथ-साथ उनके परिवार एवं आर्यसमाज के सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री मांगेराम गर्ग जी का निधन

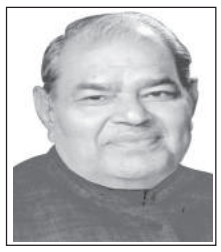

भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष श्री मांगेराम गर्ग जी का 21 जुलाई, 2019 को 83 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप आर्यसमाज के अनन्य सहयोगी एवं समर्पित समाज सेवी के रूप में विख्यात थे। उनकी इच्छानुसार उनके पार्थिक शरीर को दधिचि देहदान समिति के माध्यम से चिकित्सीय शोध के लिए दान कर दिया गया।

श्रीमती उर्मिला आर्या का निधन

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. नरेशदत्त जी की पूज्या भाभी जी एवं पण्डित मामचन्द आर्य जी की सुपुत्री श्रीमती उर्मिला आर्या जी का 21 जुलाई, 2019 को निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 जुलाई, 2019 से रविवार 28 जुलाई, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25-26 जुलाई, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 जुलाई, 2019

अपने विवाह योग्य बच्चों का ऑन लाइन कराएं पंजीकरण

www.matrimony. thearyasamaj.org

प्रतिष्ठा में,

23वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 23वां परिचय सम्मेलन का आयोजन 1 सितम्बर, 2019 को आर्यसमाज आदर्श नगर, नई दिल्ली में प्रात: 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फॉर्म **www. thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं।

– **अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक** (मो. 9414187428)

शुद्ध तांबे से निर्मित वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित
महर्षि दयानन्दकृत
सत्यार्थ प्रकाश
उर्दू भाषा में अनुवाद)

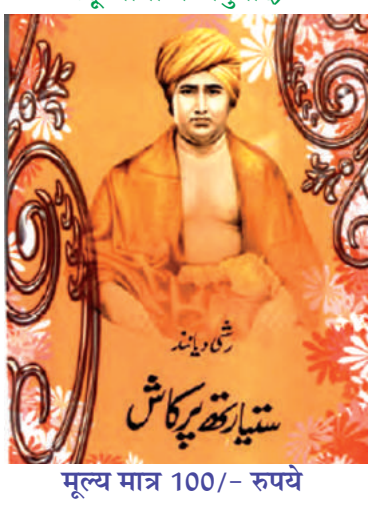

मूल्य मात्र 100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी
(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)
के विशेष सहयोग से
केवल मात्र 70/- में
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

इन्हें कौन नहीं जानता!

इनके जीवन की हकीकत जानिये कहानी उन्हीं की जुबानी

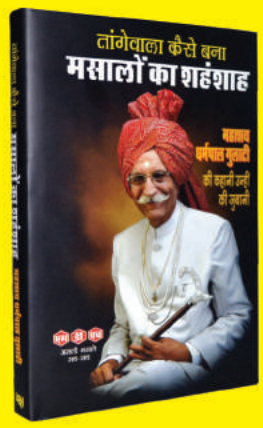

मूल्य: रु0: ~~325/-~~ 150/- पृष्ठ: 240/-

नई दिल्ली से कुतुबरोड़ तक एक तांगा चलाने वाला कैसे बना मसालों का शहंशाह

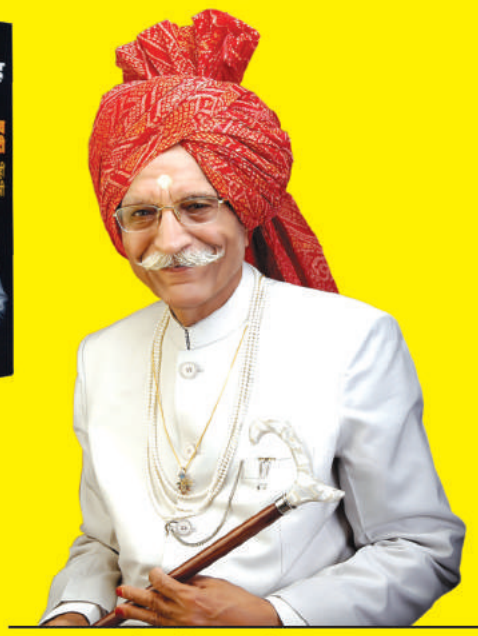

इनके जीवन को नई दिशा दिखाने वाले सफलता प्राप्ति के मूलमंत्र

मूल्य: रु0: ~~350/-~~ 200/- पृष्ठ: 168/-

इस पुस्तक का एक-एक अध्याय आपके जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

(चेयरमैन, एम.डी.एच. ग्रुप)

"मैंने जिस तरह कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करके सफलता प्राप्त की है वह लोगों के लिए भी मार्गदर्शक साबित हो सकती है।
आप इन किताबों को पढ़ें और मुझे अपने विचार लिख भेजें।
आपके पत्र की प्रतीक्षा में"

MDH असली मसाले सच-सच

महाशय धर्मपाल

-: पुस्तक मंगाने के लिए कृप्या लिखें अथवा फोन पर सम्पर्क करें :-

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह